Qabr Walon Ki 25 Hikayat (Hindi)

क़ब्र वालों की 25 हिकायात

(मअ़ क़ब्रिस्तान की दुआ़एं और म-दनी फूल)

अज़: शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

مکتبۃ المدینہ
(دعوتِ اسلامی)
SC1286

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دامت برکاتہم العالیہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِن شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افۡتَحۡ عَلَیۡنَا حِکۡمَتَکَ وَانۡشُرۡ
عَلَیۡنَا رَحۡمَتَکَ یَا ذَا الۡجَلَالِ وَالۡاِکۡرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले (اَلمُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

**त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.**

कब्र वालों की 25 हिकायात

येह रिसाला (**कब्र वालों की 25 हिकायात**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाजा-1, अह़मदआबाद, गुजरात MO. 98987 32611

E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

क़ब्र वालों की 25 ह़िकायात[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला(48 सफ़ह़ात)आख़िर तक पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ईमान ताज़ा हो जाएगा।

﴾1﴿ 560 क़ब्रों से अ़ज़ाब उठ गया

ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद मालिकी क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हो कर एक औ़रत ने अ़र्ज़ की : मेरी जवान बेटी फ़ौत हो गई है, कोई त़रीक़ा इर्शाद हो कि मैं उसे ख़्वाब में देख लूं। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उसे अ़मल बता दिया। उस ने अपनी मर्ह़ूमा बेटी को ख़्वाब में तो देखा, मगर इस ह़ाल में देखा कि **उस के बदन पर तारकोल** (या'नी डामर) **का लिबास, गरदन में ज़न्जीर और पाउं में बेड़ियां हैं !** येह **हैबतनाक** मन्ज़र देख कर वोह औ़रत कांप उठी ! उस ने दूसरे दिन येह ख़्वाब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى को सुनाया, सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहुत मग़मूम हुए। कुछ अ़र्से बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने ख़्वाब में एक लड़की को देखा, जो **जन्नत** में एक तख़्त पर अपने **सर**

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के अन्दर हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (10 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सि. 1431 हि. / 22-7-10) में फ़रमाया था। तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है। **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

पर ताज सजाए बैठी है । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को देख कर वोह कहने लगी : ''मैं उसी ख़ातून की बेटी हूं, जिस ने आप को मेरी ह़ालत बताई थी ।'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : उस के बक़ौल तो तू अ़ज़ाब में थी, आख़िर येह इन्क़िलाब किस त़रह़ आया ? मर्ह़ूमा बोली : क़ब्रिस्तान के क़रीब से एक शख़्स गुज़रा और उस ने मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत, मम्बए जूदो सख़ावत, सरापा फ़ज़्लो रह़मत صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم पर दुरूद भेजा, उस के **दुरूद शरीफ़ पढ़ने की ब-र-कत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हम पांच सो साठ[560] क़ब्र वालों से अ़ज़ाब उठा लिया ।** (ماخوذاًالتذكرة فى احوال الموتٰى واُمور الآخرة ج١ص٧٤)

बसूए कूए मदीना बढ़ो दुरूद पढ़ो
जो तुम को चाहिये जन्नत पढ़ो दुरूद पढ़ो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

﴾2﴿ बुज़ुर्ग की दुआ से सारा क़ब्रिस्तान बख़्शा गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, दुरूद शरीफ़ की बड़ी ब-र-कत है और वोह भी किसी **आ़शिक़े रसूल** की ज़बान से पढ़ा जाए तो उस की शान ही कुछ और होती है, हो सकता है वोह कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मक़्बूल बन्दा हो कि जिस के क़ब्रिस्तान से गुज़रने और **दुरूद शरीफ़** पढ़ने की ब-र-कत से **560 मुर्दों** से अ़ज़ाब उठा लिया गया । अपने अ़ज़ीज़ों की क़ब्रों पर आ़शिक़ाने रसूल को बसद एह़तिराम ले जाना, उन से वहां ईसाले सवाब करवाना यक़ीनन नफ़्अ़ बख़्श है । **अल्लाह** वालों के क़दमों की ब-र-कतों के क्या कहने ! **ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ इस्माईल ह़ज़रमी عليهِ رَحمةُ اللهِ القَوِى क़ब्रिस्तान से गुज़रे और एक

क़ब्र के क़रीब खड़े हो कर बहुत रोए फिर थोड़ी देर बा'द बे साख़्ता हंसने लगे ! जब उन से इस की वजह पूछी गई तो फ़रमाया : मैं ने देखा कि इस क़ब्रिस्तान वालों पर अ़ज़ाब हो रहा है तो मैं ने इन के लिये **अल्लाह** तआ़ला से आहो ज़ारी (करते हुए ख़ूब रो रो कर दुआ़ए मग़्फ़िरत) की, तो मुझ से कहा गया कि जाओ हम ने इन लोगों के बारे में तुम्हारी शफ़ाअ़त क़बूल कर ली। (येह फ़रमा कर कोने में बनी हुई एक **क़ब्र** की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया :) उस **क़ब्र** वाली औ़रत बोली कि **ऐ फ़क़ीह इस्माई़ल !** मैं एक गाने बजाने वाली औ़रत थी, क्या मेरी भी मग़्फ़िरत हो गई ? तो मैं ने कहा कि हां और तू भी इन्हीं (बख़्शे जाने वालों) में है। येही चीज़ मेरी हंसी का बाइ़स हुई। (شَرحُ الصُّدور ص٢٠٦)

अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام की भी क्या ख़ूब शान है ! क़ब्रों के ह़ालात इन पर ज़ाहिर हों, **क़ब्र** वालों से गुफ़्त-गू येह फ़रमाएं, इन की दुआ़ व मुनाजात से अ़ज़ाबात उठ जाएं, **क़ब्र** वाले इन से फ़रियादें करें तो येह ह़ज़रात सुन लें और उन की इमदादें फ़रमाएं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपने औलिया के सदके़ बे ह़िसाब बख़्शे।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हम को सारे औलिया से प्यार है

اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ *अपना बेड़ा पार है*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللهُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم

हमें भी क़ब्रिस्तान जा कर मुसल्मानों की क़ब्रों की ज़ियारत करनी चाहिये कि येह **सुन्नत,** बाइ़से यादे आख़िरत, अपने लिये ज़रीअ़ए मग़्फ़िरत और अहले क़ुबूर के लिये सबबे मन्फ़अ़त है। इस सिल्सिले में **तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم मुला-हज़ा हों **:** (1) मैं ने तुम को ज़ियारते क़ुबूर से मन्अ़ किया था, अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत करो कि वोह दुन्या में बे रग़बती का सबब है और आख़िरत की याद दिलाती है। (اِبن ماجہ ج ۲ ص ۲۵۲ حدیث ۱۵۷۱) (2) जब कोई शख़्स ऐसी **क़ब्र** पर गुज़रे जिसे दुन्या में जानता था और उस पर सलाम करे तो वोह मुर्दा इसे पहचानता है और इस के सलाम का जवाब देता है। (تاریخ بغداد ج ٦ ص١٣٧ حدیث ٣١٧٥) (3) जो अपने वालिदैन दोनों या एक की **क़ब्र** की हर जुमुआ़ के दिन ज़ियारत करेगा, उस की **मग़्फ़िरत** हो जाएगी और नेकूकार लिखा जाएगा। (شُعَبُ الْاِیمان ج٦ ص٢٠١ حدیث ٧٩٠١)

《3》 फ़ारूक़े आ'ज़म की क़ब्र वालों से गुफ़्त-गू !

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللّٰہ تعالیٰ عنہ एक क़ब्रिस्तान से गुज़रे तो कहा **:** "اَلسَّلامُ علیکُم یا اَھْلَ الْقُبُور! (या'नी ऐ **क़ब्र** वालो ! तुम पर सलामती हो) नई ख़बरें येह हैं कि तुम्हारी औ़रतों ने नई शादियां रचा लीं, तुम्हारे घरों में दूसरे लोग आबाद हो गए, और तुम्हारे माल तक़्सीम हो चुके हैं।" तो आवाज़ आई **: ऐ उ़मर !** हमारी नई ख़बरें येह हैं कि हम ने जो नेक आ'माल किये उन का बदला यहां मिला और जो राहे ख़ुदा में ख़र्च किया उस का भी नफ़अ़ पाया और जो (दुन्या में) छोड़ आए उस में नुक़्सान उठाया। (شَرحُ الصُّدور ص٢٠٩)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم

ग़ाफ़िल इन्सां साथ नेकी जाएगी !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ की भी क्या शान है ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ **क़ब्र** वालों से भी गुफ़्त-गू फ़रमा लेते थे । बयान कर्दा **ह़िकायत** में ख़ुसूसन मालो दौलत के ह़रीसों और आ़लीशान मकान और ऊंचे ऊंचे प्लाज़े बनाने वालों के लिये इ़ब्रत के काफ़ी **''म-दनी फूल''** हैं । आह ! इन्सान दुन्या के जिस मकान को निहायत मज़बूत़ व मुस्तह़कम बनाता और उ़म्दा से उ़म्दा अन्दाज़ में सजाता है, वोह उस के पास हमेशा नहीं रहता, बिल आख़िर दूसरे लोग उस के अन्दर आबाद हो जाते हैं, उस की ख़ून पसीने की कमाई और जम्अ़ शुदा पूंजी और ''बेंक बेलेन्स'' पर भी दूसरे ही लोग क़ब्ज़ा जमाते हैं । हां मरने के बा'द सिर्फ़ वोही माल काम आता है जो **राहे ख़ुदा** में ख़र्च किया गया हो । **सूरए दुख़ान** पारह 25 आयत नम्बर 25 ता 29 में इर्शादे रब्बानी है :

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّ عُيُوْنٍ ۙ﴿۲۵﴾ وَّ زُرُوْعٍ وَّ مَقَامٍ كَرِيْمٍ ۙ﴿۲۶﴾ وَّ نَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ۙ﴿۲۷﴾ كَذٰلِكَ ۫ وَ اَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿۲۸﴾ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَ الْاَرْضُ وَ مَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿۲۹﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कितने छोड़ गए बाग़ और चश्मे और खेत और उ़म्दा मकानात और ने'मतें जिन में फ़ारिग़ुल बाल थे हम ने यूंही किया और उन का वारिस दूसरी क़ौम को कर दिया तो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए और उन्हें मोहलत न दी गई ।

दौलते दुन्या यहीं रह जाएगी

ग़ाफ़िल इन्सां साथ नेकी आएगी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ब्रिस्तान में सलाम का त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी क़ब्रिस्तान की ह़ाज़िरी का मौक़अ़ मिले इस त़रह़ खड़े हों कि क़िब्ले की त़रफ़ पीठ और क़ब्र वालों के चेहरों की त़रफ़ मुंह हो, इस के बा'द **तिरमिज़ी** शरीफ़ में बयान कर्दा येह सलाम कहिये :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَر

तरजमा : ''ऐ **क़ब्र** वालो ! तुम पर सलाम हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए, तुम हम से पहले आ गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं।'' (ترمذی ج۲ ص۳۲۹ حدیث ۱۰۵۵) ۞ चेहरे की त़रफ़ से सलाम अ़र्ज़ करने की ह़िक्मत बयान करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ज़ियारते क़ब्र मय्यित के **मुवा-जहा** में (या'नी चेहरे के सामने) खड़े हो कर हो, और उस (या'नी **क़ब्र** वाले) की पाइंती (या'नी क़दमों) की त़रफ़ से जाए कि उस (या'नी साह़िबे **क़ब्र**) की निगाह के सामने हो, सिरहाने से न आए कि उसे सर उठा कर देखना पड़े। (फ़तावा र-ज़विय्या ''मुख़र्रजा'', जि. 9, स. 532) ۞ ख़ूब रो रो कर अपनी और अहले क़ुबूर की मग़्फ़िरत के लिये दुआ मांगिये, अगर रोना न आए तो रोने की सी सूरत बना लीजिये।

क़ब्र पर फूल डालना

क़ब्र पर फूल डालना बेहतर है कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह़

करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा । (رَدُّالْمُحتار ج ٣ ص ١٨٤) ۞ यूहीं जनाज़े पर फूलों की चादर डालने में ह़रज नहीं । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 852, मक-त-बतुल मदीना) ۞ **क़ब्र** पर से तर घास नोचना न चाहिये कि उस की तस्बीह़ से रह़मत उतरती है और मय्यित को उन्स ह़ासिल होता है और नोचने में मय्यित का ह़क़ ज़ाएअ़ करना है। (رَدُّالْمُحتار ج٣ص١٨٤)

क़ब्रिस्तान में क्या ग़ौर करे ?

क़ब्रिस्तान की ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर इधर उधर की बातों और ग़फ़्लत भरे ख़यालों के बजाए **फ़िक्रे मदीना** या'नी अपना मुह़ा-सबा करते हुए अपनी मौत को याद कर के हो सके तो आंसू बहाइये और गुनाहों को याद कर के ख़ुद को अ़ज़ाबे **क़ब्र** से ख़ूब डराइये, तौबा कीजिये और येह तसव्वुर ज़ेह्न में जमाइये कि जिस त़रह़ आज येह मुर्दे अपनी अपनी क़ब्रों में अकेले पड़े हैं, अ़न्क़रीब मैं भी इसी त़रह़ अंधेरी **क़ब्र** में तन्हा पड़ा होउंगा नीज़ ह़दीसे पाक के इन अल्फ़ाज़ को याद कीजिये : كَمَا تَدِيْنُ تُدَانُ या'नी जैसी करनी वैसी भरनी । (اَلْجَامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوطی ص٣٩٩حديث ٦٤١١)

क़ब्र में मय्यित उतरनी है ज़रूर जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ गुलाब के फूल या अज़्दहे ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **सुफ़्यान बिन उ़यैना** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के

वक़्त रह़मते इलाही उतरती है। (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء ج ۷ ص ۳۳۵ رقم ۱۰۷۵۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब नेक बन्दों के तज़्किरे का येह ह़ाल है तो जहां नेक बन्दे ख़ुद मौजूद हों वहां नुज़ूले रह़मत का क्या आ़लम होगा ! बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे क़ब्रों में हों तब भी फ़ैज़ पहुंचाते हैं, और इन के पड़ोस में दफ़्न होने वालों के भी वारे न्यारे हो जाते हैं चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत''** सफ़ह़ा 270 पर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इर्शाद है : **मैं** ने ह़ज़रत मियां साह़िब क़िब्ला قُدِّسَ سِرُّهٗ. को फ़रमाते सुना : एक जगह कोई **क़ब्र** खुल गई और मुर्दा नज़र आने लगा, देखा कि **गुलाब** की दो शाख़ें उस के बदन से लिपटी हैं और गुलाब के **दो फूल** उस के नथनों (या'नी नाक के दोनों सूराख़ों) पर रखे हैं। उस के अ़ज़ीज़ों ने इस ख़याल से कि यहां **क़ब्र** पानी के सदमे से खुल गई, दूसरी जगह **क़ब्र** खोद कर (मर्ह़ूम की लाश को) उस में रखा, अब जो देखा तो **दो अज़्दहे** (या'नी दो बहुत बड़े सांप) उस के बदन से लिपटे अपने फनों से उस का मुंह **भम्भोड़** (या'नी नोच) रहे हैं ! ह़ैरान हुए। किसी साह़िबे दिल से येह वाक़िआ़ बयान किया, उन्हों ने फ़रमाया : वहां भी येह अज़्दहे ही थे मगर एक **वलिय्युल्लाह** के मज़ार का क़ुर्ब था, उस की ब-र-कत से वोह अ़ज़ाब रह़मत हो गया था, वोह **अज़्दहे** दरख़्ते गुल की शक्ल हो गए थे और उन के फन **गुलाब के फूल**। इस (या'नी मर्ह़ूम) की ख़ैरियत चाहो तो वहीं ले जा कर दफ़्न करो। वहीं ले जा कर रखा फिर वोही

दरख़्ते गुल थे और वोही **गुलाब के फूल**।

मुर्दों को बुज़ुर्गों के पास दफ़्न करो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपनी बरादरी में तदफ़ीन भी बेशक जाइज़ है मगर किसी **वलिय्युल्लाह** के क़ुर्ब में दो[2] गज़ ज़मीन नसीब हो जाए तो मदीना मदीना। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : अपने मुर्दों को बुज़ुर्गों के पास दफ़्न करो कि इन की ब-र-कत के सबब उन पर अ़ज़ाब नहीं किया जाता। **هُمُ الْقَوْمُ لَايَشْقٰى بِهِمْ جَلِيْسُهُم** (या'नी) येह ऐसी क़ौम है जिस का हम नशीन (या'नी सोह़बत में रहने वाला) भी मह़रूम नहीं रहता। व लिहाज़ा ह़दीस में फ़रमाया : **اَدْفِنُوْا مَوْتَاكُمْ وَسْطَ قَوْمِ الصّٰلِحِيْن** (या'नी) अपने मुर्दों को नेकों के दरमियान दफ़्न करो। (اَلْفِرْدَوْس بمأثور الْخَطّاب ج۱ ص۱۰۲ حدیث۳۳۷)

मरूं त़यबा में ऐ लोगो ! बक़ीए पाक ले जाना
सह़ाबा और अहले बैत के साए में दफ़्नाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿ क़ब्रिस्तान के मुर्दे ख़्वाब में आ पहुंचे !

एक साह़िब का मा'मूल था कि वोह क़ब्रिस्तान में आ कर बैठ जाते और जब भी कोई **जनाज़ा** आता उस की नमाज़ पढ़ते और शाम के वक़्त क़ब्रिस्तान के दरवाज़े पर खड़े हो कर इस त़रह़ दुआएं देते : "(ऐ **क़ब्र** वालो !) ख़ुदा तुम को उन्स अ़त़ा करे, तुम्हारी ग़ुरबत पर रह़्म

करे, तुम्हारे गुनाह मुआफ़ फ़रमाए और नेकियां क़बूल करे।" वोही साहिब फ़रमाते हैं : एक शाम (ब वक़्ते रुख़्सत) मैं अपना क़ब्रिस्तान वाला मा'मूल पूरा न कर सका या'नी उन्हें दुआएं दिये बिग़ैर ही घर आ गया। **मेरे ख़्वाब में एक कसीर मख़्लूक़ आ गई !** मैं ने उन से पूछा : आप लोग कौन हैं और क्यूं आए हैं ? बोले : हम क़ब्रिस्तान वाले हैं, आप ने आदत कर ली थी कि घर आते वक़्त हम को हदिय्या (या'नी तोहफ़ा) देते थे और आज न दिया। मैं ने कहा : वोह हदिय्या क्या था ? तो उन्हों ने कहा : वोह हदिय्या **दुआओं** का था। मैं ने कहा : अच्छा, अब येह **हदिय्या** मैं तुम को फिर से दूंगा। इस के बा'द मैं ने अपने इस मा'मूल को कभी तर्क न किया। (شرحُ الصُّدور ص۲۲۶)

रूहें घरों पर आ कर ईसाले सवाब का मुता-लबा करती हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा मरने वाले अपनी क़ब्रों पर आने जाने वालों को पहचानते हैं, और उन्हें ज़िन्दों की **दुआओं** से फ़ाएदा पहुंचता है, जब ज़िन्दा लोगों की त़रफ़ से **ईसाले सवाब** के तोहफ़े आना बन्द होते हैं, तो उन को आगाही ह़ासिल हो जाती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें इजाज़त देता है तो घरों पर जा कर ईसाले सवाब का मुता-लबा भी करते हैं। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** (मुख़र्रजा) जिल्द 9 सफ़ह़ा 650 पर नक़्ल करते हैं : "ग़राइब" और "ख़ज़ाना" में मन्क़ूल है कि **मुअमिनीन की रूहें हर शबे जुमुआ** (या'नी जुमा'रात और जुमुआ की दरमियानी रात), **रोज़े ईद, रोज़े आशूरा और शबे बराअत को अपने घर आ कर बाहर खड़ी**

रहती हैं और हर रूह़ ग़मनाक बुलन्द आवाज़ से निदा करती (या'नी पुकार कर कहती) है कि ऐ मेरे घर वालो ! ऐ मेरी औलाद ! ऐ मेरे क़राबत दारो ! (हमारे ईसाले सवाब की निय्यत से) स-दक़ा (ख़ैरात) कर के हम पर मेहरबानी करो ।

है कौन कि गिर्या करे या फ़ातिह़ा को आए
बेकस के उठाए तेरी रह़मत के भरन फूल

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾6﴿ ईसाले सवाब की हाथों हाथ ब-र-कत

ईसाले सवाब की हाथों हाथ ब-र-कत देखने के ज़िम्न में **ह़ज़रते** अ़ल्लामा **अ़ली क़ारी** علیہ رحمۃ اللہ الباری नक़्ल फ़रमाते हैं : **ह़ज़रते** शैख़ अक्बर **मुह़्युद्दीन** इब्ने अ़-रबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक जगह दा'वत में तशरीफ़ ले गए, आप ने देखा कि एक नौ जवान खाना खा रहा है, जिस के मु-तअ़ल्लिक़ येह मशहूर था कि येह साह़िबे कश्फ़ है, **जन्नत** और दोज़ख़ का भी इस को कश्फ़ होता है, खाना खाते हुए अचानक वोह **रोने** लगा । वजह दरयाफ़्त करने पर कहा कि मेरी मां **जहन्नम** में जल रही है। **ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ अक्बर **मुह़्युद्दीन** इब्ने अ़-रबी علیہ رَحْمَةُ اللهِ القَوِی के पास येही **कलिमए त़य्यिबा सत्तर हज़ार मर्तबा** पढ़ा हुवा मह़फ़ूज़ था, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस की मां को दिल में **ईसाले सवाब** कर दिया । फ़ौरन वोह नौ जवान हंस पड़ा और बोला कि अपनी मां को **जन्नत** में देखता हूं । (مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيح ج۳ ص۲۲۲ تحت الحديث ۱۱۴۲ دارالفكر بيروت)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! वोह "नौ जवान" कश्फ़ के ज़रीए़ ग़ैब के ह़ालात देख लेता था ! सय्यिदुना इब्ने अ़-रबी عليه رحمة الله القوی के ईसाले सवाब करने पर पांसा ही पलट गया, जिस ह़दीसे पाक में **सत्तर हज़ार कलिमए त़य्यिबा** पढ़ने की फ़ज़ीलत है वोह येह है : "बेशक जिस शख़्स ने सत्तर हज़ार मर्तबा कहा : لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मग़्फ़िरत फ़रमाएगा और जिस के लिये येह कहा गया उस की भी मग़्फ़िरत फ़रमाएगा।" (مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيح ج۳ ص۲۲۲ تحت الحديث ۱۱۴۲) हमें भी चाहिये कि ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार हम भी सत्तर हज़ार कलिमए त़य्यिबा पढ़ लें। जिन के अ़ज़ीज़ रिश्तेदार फ़ौत हो जाएं उन को चाहिये कि येह विर्द कर के ईसाले सवाब कर दें। एक दिन और एक ही निशस्त में पढ़ना ज़रूरी नहीं, थोड़े थोड़े कर के भी पढ़ सकते हैं, अगर रोज़ाना 100 मर्तबा पढ़ लें तब भी **दो बरस** से पहले पहले सत्तर हज़ार की ता'दाद पूरी हो जाएगी।

मेरे आ'माल का बदला तो जहन्नम ही था

मैं तो जाता मुझे सरकार ने जाने न दिया (सामाने बख़्शिश)

मरने वाले को ख़्वाब में बीमार देखने की ता'बीर

किसी फ़ौत शुदा को ख़्वाब के अन्दर ग़ुस्से में, बीमार या नंगा वग़ैरा देखने की ता'बीर आ़म तौ़र पर येही बयान की जाती है कि मुर्दा अ़ज़ाब में मुब्तला है, लिहाज़ा किसी मुसल्मान को مَعَاذَ الله कोई इस ह़ाल में देखे तो उसे चाहिये कि मर्हूम को **ईसाले सवाब** करे। चुनान्चे दा'वते

इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत** (मुख़्तरजा)'' सफ़ह़ा 139 से ईमान अफ़्रोज़ मा'लूमाती ''अ़र्ज़ व इर्शाद'' मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : **अ़र्ज़ :** हुज़ूर ! एक शख़्स ने अपनी लड़की के इन्तिक़ाल के बा'द देखा कि वोह अ़लील (या'नी बीमार) और बरह्ना है। येह **ख़्वाब** चन्द बार देख चुका है। **इर्शाद :** कलिमए त़य्यिबा (या'नी हर बार لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ) सत्तर हज़ार (70,000) मर्तबा मअ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ कर **बख़्शा** दिया जाए اِنْ شَآءَ الله पढ़ने वाले और जिस को बख़्शा (या'नी ईसाले सवाब किया) है, दोनों के लिये **ज़रीअ़ए नजात** होगा और पढ़ने वाले को दूना **सवाब** होगा और अगर दो[2] को बख़्शेगा तो तिगना (या'नी तीन गुना) इसी त़रह़ करोड़ों बल्कि जमीअ़ (या'नी तमाम) मुअमिनीन व मुअमिनात को **ईसाले सवाब** कर सकता है, इसी निस्बत से इस पढ़ने वाले को **सवाब** होगा।

अल्लाह की रह़मत से तो जन्नत ही मिलेगी
ऐ काश ! मह़ल्ले में जगह उन के मिली हो (वसाइले बख़्शिश)

﴾7﴿ आग का शो'ला ले कर आया, अगर.....

एक आदमी ने अपने मर्ह़ूम भाई को ख़्वाब में देख कर पूछा : **क़ब्र** में दफ़्नाने के बा'द क्या हुवा ? जवाब दिया : एक शख़्स **आग का शो'ला** ले कर मेरी त़रफ़ आया, अगर दुआ़ करने वाला मेरे लिये दुआ़ न करता तो वोह मुझे मार ही देता। (شرحُ الصُّدور ص ٢٨١)

ज़िन्दों की दुआ़ओं से मुर्दे बख़्शे जाते हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, फ़ौत शुदा मुसल्मानों

को ज़िन्दों की दुआ़ओं का बेहद फ़ाएदा पहुंचता है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 419 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**म-दनी पंजसूरह**'' सफ़ह़ा 397 पर है : **मदीने** के ताजदार صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : मेरी उम्मत गुनाह समेत **क़ब्र** में दाख़िल होगी और जब निकलेगी तो बे गुनाह होगी क्यूं कि वोह मुअमिनीन की दुआ़ओं से बख़्श दी जाती है। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج ۱ ص ۵۰۹ حدیث ۱۸۷۹)

मुझ को सवाब भेजो, दुआ़एं हज़ार दो
गो क़ब्र में उतारा, न दिल से उतार दो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾8﴿ मर्ह़ूम वालिद साह़िब ने ख़्वाब में आ कर कहा कि.....

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **सुफ़्यान बिन उ़यैना** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है : जब मेरे वालिद साह़िब का इन्तिक़ाल हो गया तो मैं ने बहुत आहो बुका की (या'नी ख़ूब रोया धोया) और उन की **क़ब्र** पर रोज़ाना ह़ाज़िरी देने लगा फिर रफ़्ता रफ़्ता कुछ कमी आ गई। एक रोज़ वालिदे मर्ह़ूम ने **ख़्वाब** में तशरीफ़ ला कर फ़रमाया : ऐ बेटे ! तुम ने क्यूं ताख़ीर की ? मैं ने पूछा : क्या आप को मेरे आने का इ़ल्म हो जाता है ? फ़रमाया : ''क्यूं नहीं, मुझे तुम्हारी हर ह़ाज़िरी की ख़बर हो जाती थी और मैं तुम्हें देख कर ख़ुश होता था नीज़ मेरे **पड़ोसी मुर्दे** भी तुम्हारी दुआ़ से राज़ी होते थे।'' चुनान्चे इस ख़्वाब के बा'द मैं ने पाबन्दी से वालिद साह़िब की **क़ब्र** पर जाना शुरूअ़ कर दिया। (شَرْحُ الصُّدور ص ۲۲۷)

﴾9﴿ क़ब्र में मुर्दा डूबतों की त़रह़ होता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि **क़ब्र** वाले आने जाने वाले रिश्तेदारों और दोस्त दारों की आमद और उन की दुआ़ और **ईसाले सवाब** पर ख़ुश होते हैं और जो रिश्तेदार नहीं जाता उस के **मुन्तज़िर** रहते हैं । **सरकारे नामदार** صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم का इर्शादे मुश्कबार है : मुर्दे का ह़ाल **क़ब्र** में डूबते हुए इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की **दुआ़** इस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़्दीक वोह दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **क़ब्र** वालों को उन के ज़िन्दा **मु-तअ़ल्लिक़ीन** की त़रफ़ से हदिय्या किया हुवा सवाब **पहाड़ों** की मानिन्द अ़त़ा फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) मुर्दों के लिये "दुआ़ए मग़्फ़िरत करना है।" (شُعَبُ الْاِیْمَان ج٦ص٢٠٣حدیث٧٩٠٥)

मां बाप की क़ब्रें अगर बीच क़ब्रिस्तान में हों तो.....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई वोह बड़ा ही ख़ुश नसीब बेटा है जो अपने वालिदैने मर्ह़ूमैन की क़ब्रों की ज़ियारत को जाया करे। येह मस्अला याद रखिये कि दूसरी क़ब्रों पर पाउं रखे बिग़ैर मां बाप वग़ैरा की क़ब्रों तक न जा सकते हों तो दूर ही से फ़ातिह़ा पढ़ना होगा, क्यूं कि बुज़ुर्गों के मज़ारों या मां बाप की क़ब्रों पर जाना **मुस्तह़ब** काम है और मुसल्मान की **क़ब्र** पर पाउं रखना **ह़राम**, **मुस्तह़ब** काम के लिये ह़राम

काम की शरीअ़त में इजाज़त नहीं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** (मुख़र्रजा) जिल्द 9 सफ़ह़ा 524 पर इर्शाद फ़रमाते हैं : "इस का लिह़ाज़ लाज़िम है कि जिस **क़ब्र** के पास बिल ख़ुसूस जाना चाहता है उस तक (ऐसा) क़दीम (या'नी पुराना) रास्ता हो, (जो कि क़ब्रें मिटा कर न बनाया गया हो) अगर क़ब्रों पर से हो कर जाना पड़े तो इजाज़त नहीं, सरे राह दूर खड़े हो कर एक **क़ब्र** की त़रफ़ **मु-तवज्जेह** हो कर ईसाले सवाब कर दे।"

क़ब्र के पास बैठ कर तिलावत करने के बारे में.....

बारगाहे र-ज़विय्यत में होने वाले "सुवाल व जवाब" मुला-ह़ज़ा हों, **सुवाल :** "क़ब्रिस्तान में कलाम शरीफ़ या पंजसूरह **क़ब्र** के नज़्दीक बैठ कर तिलावत करना जाइज़ है या नहीं ?" **अल जवाब :** "**क़ब्र** के पास तिलावत याद पर ख़्वाह देख कर हर त़रह़ जाइज़ है (कि वहां तिलावत से रह़मत उतरती और मय्यित का दिल बहलता है) जब कि **लि वज्हिल्लाह** (या'नी **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये) हो, और **क़ब्र** पर न बैठे, न किसी **क़ब्र** पर पाउं रख कर वहां पहुंचना हो, और अगर बे इस के (या'नी **क़ब्र** पर पाउं रखे बिग़ैर) वहां तक न जा सके तो **क़ब्र** के नज़्दीक तिलावत के लिये जाना **ह़राम** है, बल्कि कनारे ही से जहां तक बे किसी **क़ब्र** को रौंदे जा सकता है, तिलावत करे।"

(फ़तावा र-ज़विय्या "मुख़र्रजा", जि. 9, स. 524, 525)

﴾10﴿ नूरानी लिबास

एक बुज़ुर्ग ने अपने मर्ह़ूम भाई को ख़्वाब में देख कर पूछा : क्या ज़िन्दा लोगों की दुआ़ तुम लोगों को पहुंचती है ? तो उन्हों ने जवाब दिया :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

"हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह **नूरानी लिबास** की सूरत में आती है उसे हम पहन लेते हैं।" (شَرحُ الصُّدُوْرص۳۰۵)

जल्वए यार से हो क़ब्र आबाद वह्शते क़ब्र से बचा या रब !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾11﴿ नूरानी त़बाक़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा हम जो दुआ व **ईसाले सवाब** करते हैं वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत से फ़ौत शुदा मुसल्मानों को निहायत उ़म्दा शक्ल में पहुंचता है, लिहाज़ा हम को चाहिये कि अपने मर्हूम अ़ज़ीज़ों बल्कि जुम्ला मुसल्मानों को ईसाले सवाब करते रहें। "शर्हुस्सुदूर" में है : "**जब** कोई शख़्स मय्यित को ईसाले सवाब करता है तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام उसे **नूरानी त़बाक़** (या'नी थाल) में रख कर **क़ब्र** के कनारे खड़े हो कर फ़रमाते हैं : "**ऐ क़ब्र वाले !** येह हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) तेरे घर वालों ने भेजा है क़बूल कर।" येह सुन कर वोह ख़ुश होता है और उस के पड़ोसी (मुर्दे) अपनी मह़रूमी पर ग़मगीन होते हैं।" (ऐज़न, स. 308)

क़ब्र में आह ! घुप अंधेरा है फ़ज़्ल से कर दे चांदना या रब !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ईसाले सवाब के 4 म-दनी फूल

मर्हूम की क़ब्र में नूर पैदा हो

(1) (वलिय्युल्लाह के मज़ार शरीफ़ या) किसी भी मुसल्मान की **क़ब्र** की ज़ियारत को जाना चाहे तो **मुस्तह़ब** येह है कि पहले अपने मकान पर (ग़ैरे मकरूह वक़्त में) दो रकअ़त नफ़्ल पढ़े, हर रक्अ़त में **सू-रतुल फ़ातिह़ा**

के बा'द एक बार **आ-यतुल कुर्सी** और तीन बार **सू-रतुल इख़्लास** पढ़े और इस नमाज़ का सवाब साहिबे **क़ब्र** को पहुंचाए, **अल्लाह** तआ़ला उस फ़ौत शुदा बन्दे की **क़ब्र में नूर** पैदा करेगा और इस (सवाब पहुंचाने वाले) शख़्स को बहुत ज़ियादा सवाब अ़ता फ़रमाएगा।

(फ़तावा आ़लमगीरी, जि. 5, स. 350)

सब क़ब्र वालों को सिफ़ारिशी बनाने का अ़मल

(2) शफ़ीए़ मुजरिमान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो शख़्स क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुवा फिर उस ने **सू-रतुल फ़ातिहा, सू-रतुल इख़्लास** और **सू-रतुत्तकासुर** पढ़ी फिर येह दुआ़ मांगी : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने जो कुछ क़ुरआन पढ़ा उस का सवाब इस क़ब्रिस्तान के मुअमिन मर्दों और मुअमिन औ़रतों को पहुंचा। तो वोह सब के सब क़ियामत के रोज़ उस (या'नी ईसाले सवाब करने वाले) के **सिफ़ारिशी** होंगे। (شَرْحُ الصُّدُور ص ۳۱۱)

मुर्दों की गिनती के बराबर सवाब कमाने का त़रीक़ा

(3) ह़दीसे पाक में है : "जो ग्यारह बार **सू-रतुल इख़्लास** पढ़ कर इस का सवाब मुर्दों को पहुंचाए, तो मुर्दों की गिनती के बराबर उसे (या'नी ईसाले सवाब करने वाले को) सवाब मिलेगा।"

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج۷ ص۲۸۵ حدیث۲۳۱۵۲)

(4)इस त़रह़ भी ईसाले सवाब किया जा सकता है : क़ब्रिस्तान में जाए तो الحمد शरीफ़ और الٓمّٓ से مُفْلِحُوْنَ तक और اٰيَةُ الْكُرْسِی और اٰمَنَ الرَّسُوْلُ आख़िर सूरह तक और سُوْرَۂ يٰسٓ और تَبٰرَكَ الَّذِیْ और

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ एक एक बार और قُلْ هُوَ اللّٰهُ (मुकम्मल सूरह) बारह या ग्यारह या सात या तीन बार पढ़े ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 4, स. 849, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

भेजो ऐ भाइयो मुझे तोह़फ़ा सवाब का
देखूं न काश क़ब्र में, मैं मुंह अ़ज़ाब का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾12-13﴿ ग़ौसे पाक की "अपने इमाम" के मज़ार पर ह़ाज़िरी

हमारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم "ह़म्बली" या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अह़मद** बिन ह़म्बल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के मुक़ल्लिद थे, ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه क़ब्रिस्तान और ख़ुसूसन बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के मज़ाराते त़य्यिबात की ज़ियारत फ़रमाया करते थे। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ली बिन हैती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते शैख़ **अ़ब्दुल क़ादिर** जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِیْ और शैख़ बक़ा बिन बत़ौ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के हमराह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अह़मद** बिन ह़म्बल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार की ज़ियारत की तो देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अह़मद** बिन ह़म्बल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपनी क़ब्रे अन्वर से निकल कर ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِیْ से मुआ़-नक़ा किया (या'नी गले मिले) और आप को ख़िल्अ़त (या'नी इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई का लिबास) इनायत कर के फ़रमाया : ऐ अ़ब्दुल क़ादिर ! तमाम लोग इ़ल्मे शरीअ़त व त़रीक़त में तेरे मोह़ताज होंगे । फिर मैं ह़ज़रते ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के हमराह ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़

मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार पर गया, वहां ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِيْ ने फ़रमाया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاشَيْخُ مَعْرُوْفٌ! عَبَرْنَاكَ بِدَرْجَتَيْن या'नी ऐ शैख़ मा'रूफ़! आप पर सलामती हो, हम आप से दो द-रजे बढ़ गए हैं। उन्हों ने **क़ब्र** में से जवाब दिया : وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَاسَيِّدَ اَهْلِ زَمَانِهٖ या'नी और आप पर सलामती हो, ऐ अपने ज़माने वालों के सरदार ! (قلائد الجواہر ص ۳۹ مصر)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين वफ़ात के बा'द भी अपने मज़ारात में ज़िन्दा व ह़यात रहते हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رضی اللہ تعالٰی عنہ अपनी **क़ब्रे अन्वर** से निकल कर ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَدِيْر से बग़ल गीर हुए और ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने रौज़ए मुबारक से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सलाम का इस त़रह़ जवाब दिया कि बाहर सुनाई दिया।

जो वली क़ब्ल थे या बा'द हुए या होंगे
सब अदब रखते हैं दिल में मेरे आक़ा तेरा (ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

"अल मदद या ग़ौस" के दस हुरू फ़ की निस्बत से मज़ारात के मु-तअ़ल्लिक़ 10 म-दनी फूल

मज़ारात पर ह़ाज़िरी का त़रीक़ा

(1) (औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के) मज़ाराते त़य्यिबात पर

हाज़िर होने में पाइंती (या'नी क़दमों) की त़रफ़ से जाए और कम अज़ कम चार हाथ के फ़ासिले पर मुवा-जहा में (या'नी चेहरे के सामने) खड़ा हो और मु-तवस्सित़ (या'नी दरमियानी) आवाज़ में (इस त़रह़) सलाम अ़र्ज़ करे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاسَيِّدِیْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ फिर **दुरूदे ग़ौसिया** तीन बार, اَلْحَمْد शरीफ़ एक बार, **आ-यतुल कुर्सी** एक बार, **सूरए इख़्लास** सात बार, फिर "**दुरूदे ग़ौसिया**" सात बार, और वक़्त फ़ुरसत दे तो **सूरए यासीन** और **सूरए मुल्क** भी पढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ करे कि इलाही ! इस क़िराअत पर मुझे इतना सवाब दे जो तेरे करम के क़ाबिल है, न उतना जो मेरे अ़मल के क़ाबिल है और इसे मेरी त़रफ़ से इस बन्दए मक़्बूल को नज़्र पहुंचा। फिर अपना जो मत़लब जाइज़ शर-ई हो उस के लिये दुआ करे और साहिबे मज़ार की रूह़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपना वसीला क़रार दे, फिर उसी त़रह़ सलाम कर के वापस आए। (फ़तावा र-ज़विय्या "मुख़र्रजा", जि. 9, स. 522)

दुरूदे ग़ौसिया

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَ مَوْلَا نَا مُحَمَّدٍ مَّعْدِنِ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَاٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

(म-दनी पंजसूरह, स. 260)

मज़ारात की ज़ियारत सुन्नत है

(2) हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم **शु-हदाए उ़हुद** عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मुबारक क़ब्रों की ज़ियारत को तशरीफ़ ले जाते और उन के लिये दुआ फ़रमाते।

(مُصَنَّف عَبْد الرَّزّاق ج٣ ص٣٨١ رقم ٦٧٤٥، تفسیر دُرِّ مَنثور ج٤ ص٦٤٠)

मज़ाराते औलिया से नफ़्अ़ मिलता है

(3) फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : औलियाए किराम व बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين के मज़ाराते त़य्यिबात की ज़ियारत को जाना **जाइज़** है वोह अपने ज़ाइर (या'नी मज़ार पर ह़ाज़िर होने वाले) को नफ़्अ़ पहुंचाते हैं। (رَدُّالْمُحتار ج۳ ص۱۷۸)

क़ब्र को बोसा न दें

(4) मज़ार शरीफ़ या **क़ब्र** की ज़ियारत के लिये जाते हुए रास्ते में फ़ुज़ूल बातों में मश्ग़ूल न हो। (ऐज़न) **क़ब्र** को बोसा न दें, न **क़ब्र** पर हाथ लगाएं। (फ़तावा र-ज़विय्या "मुख़र्रजा", जि. 9, स. 522, 526) बल्कि **क़ब्र** से कुछ फ़ासिले पर खड़े हो जाएं।

शु-हदाए किराम के मज़ारात पर सलाम का त़रीक़ा

(5) शु-हदाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के मज़ाराते त़ाहिरात की ज़ियारत के वक़्त इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ कीजिये : سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ

तरजमा : *तुम पर सलामती हो तुम्हारे सब्र के बदले, पस आख़िरत क्या ही अच्छा घर है।* (फ़तावा आ़लमगीरी, जि. 5, स. 350)

मज़ार पर चादर चढ़ाना

(6) बुज़ुर्गाने दीन और औलिया व सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين के मज़ाराते त़य्यिबात पर ग़िलाफ़ (या'नी चादर) डालना जाइज़ है, जब कि येह मक़्सूद हो कि साह़िबे मज़ार की वक़्अ़त (या'नी इ़ज़्ज़त व अ़-ज़मत) अ़वाम की नज़र में पैदा हो, उन का अदब करें, उन के ब-रकात ह़ासिल करें। (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۵۹۹)

मज़ार पर गुम्बद बनाना

(7) **क़ब्र** को पुख़्ता (या'नी पक्की) न करना बेहतर है, आ़म मुसल्मान की **क़ब्र** के गिर्द बिला मक़्सदे सह़ीह़ इ़मारत बनाने की शरअ़न इजाज़त नहीं कि येह माल ज़ाएअ़ करना है। अलबत्ता औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के मज़ारात के गिर्द अच्छी अच्छी निय्यतों से इ़मारात व गुम्बद बनाना जाइज़ है। **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 9 (मुख़र्रजा) सफ़ह़ा 418 पर है : "कश्फ़ुल ग़िता" में है : "मत़ालिबुल मुअमिनीन" में लिखा है कि सलफ़ (या'नी गुज़श्ता दौर के बुज़ुर्गों) ने मशहूर उ़-लमा व मशाइख़ की क़ब्रों पर इ़मारत बनाना मुबाह़ (या'नी जाइज़) रखा है ताकि लोग ज़ियारत करें और उस में बैठ कर आराम लें, लेकिन अगर **ज़ीनत** (या'नी ख़ूब सूरती और आराइश) के लिये बनाएं तो **ह़राम** है। मदीनए मुनव्वरह में सह़ाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की क़ब्रों पर अगले ज़माने में क़ुब्बे (या'नी गुम्बद) ता'मीर किये गए हैं, ज़ाहिर येह है कि उस वक़्त जाइज़ क़रार देने से ही येह हुवा और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मरक़दे अन्वर (या'नी मज़ारे पाक) पर भी एक बुलन्द क़ुब्बा (अ़ज़ीम सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद शरीफ़) है।

मज़ारात पर चराग़ां करना

(8) **अगर** शम्एं रोशन करने में फ़ाएदा हो कि मौज़ए़ क़ुबूर में मस्जिद है या क़ुबूर सरे राह (या'नी रास्ते में) हैं या वहां कोई शख़्स बैठा है या मज़ार किसी **वलिय्युल्लाह** या **मुह़क़्क़िक़ीन** उ़-लमा में से किसी आ़लिम का है, वहां शम्एं रोशन करें **उन की रूह़े मुबारक की ता'ज़ीम**

के लिये जो अपने बदन की, ख़ाक पर ऐसी तजल्ली डाल रही है जैसे आफ़्ताब ज़मीन पर, ताकि इस रोशनी (या'नी लाइटिंग) करने से लोग जानें कि येह वली का मज़ारे पाक है ताकि इस से **तबर्रुक** करें और वहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ मांगें कि इन की दुआ क़बूल हो, तो येह अम्र जाइज़ है इस से अस्लन मुमा-न-अ़त नहीं, और आ'माल का मदार निय्यतों पर है। (**फ़तावा र-ज़विय्या**, "मुख़र्रजा", जि. 9, स. 490, اَلْحدِیْقَةُ النَّدِیَّة ج۲ص ۶۳۰)

क़ब्र का त़वाफ़

(9) ता'ज़ीम की निय्यत से **क़ब्र** का त़वाफ़ करना मन्अ़ है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 850)

क़ब्र को सज्दा करना

(10) **क़ब्र** को सज्दए ता'ज़ीमी करना **ह़राम** है और अगर इ़बादत की निय्यत हो तो **कुफ़्र** है।

(माख़ूज़ अज़ **फ़तावा र-ज़विय्या**, जि. 22, स. 423)

﴾14﴿ क़ब्र में क़ुरआन पढ़ने वाला नौ जवान

अबुन्नज़्र नैशापूरी علیہ رحمۃ اللہ القوی जो कि एक मुत्तक़ी गोरकन थे, फ़रमाते हैं : मैं ने एक क़ब्र खोदी, लेकिन उस में दूसरी क़ब्र की त़रफ़ रास्ता निकल आया तो मैं ने देखा कि उ़म्दा लिबास में मल्बूस और बेहतरीन ख़ुश्बू से मुअ़त्त़र एक ह़सीनो जमील नौ जवान उस में पालती (या'नी चौकड़ी) मारे बैठा **क़ुरआने करीम** पढ़ रहा है। नौ जवान ने मेरी त़रफ़ देख कर फ़रमाया : क्या क़ियामत आ गई ? मैं ने कहा : नहीं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

फ़रमाया **:** जहां से मिट्टी हटाई थी वहीं रख दो, तो मैं ने मिट्टी वहीं रख दी । (شـرح الـصُّدور ص ١٩٢)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने नबियों, वलियों और मख़्सूस नेक बन्दों के जिस्मों को **क़ब्रों** में भी सलामत रखता और ख़ूब इन्आमो इक्राम से मालामाल करता है, येह ह़ज़रात अपने मज़ारात में भी इबादात की लज़्ज़ात उठाते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारों के मज़ारों को ख़ुश्बूओं से ख़ूब महकाता है और लोगों की तरग़ीब के लिये कभी आम लोगों पर इस का इज़्हार भी फ़रमा देता है ।

दुन्या व आख़िरत में जब मैं रहूं सलामत
प्यारे पढ़ूं न क्यूंकर तुम पर सलाम हर दम (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

﴾15﴿ महकती क़ब्र

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अबिद्दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **ह़ज़रते** सय्यिदुना मुग़ीरा बिन ह़बीब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत की, कि एक **क़ब्र** से ख़ुश्बूएं आती थीं । किसी ने साहिबे क़ब्र को ख़्वाब में देख कर उन से पूछा **:** येह ख़ुश्बूएं कैसी हैं ? जवाब दिया **: तिलावते क़ुरआन और रोज़े की ।** (كتاب التهجد وقيام الليل رقم٢٨٧ ج١ ص٣٠٥)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, क़ुरआने करीम की

तिलावत और रोज़ा व इ़बादत में बेह़द ब-र-कत है और रब्बुल इ़ज़्ज़त अपनी रह़मत से अपने इ़बादत गुज़ार बन्दों की क़ब्रों को ख़ुश्बूओं से महकाता है।

क्या महकते हैं महकने वाले
बू पे चलते हैं भटकने वाले (ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾16﴿ काना मुर्दा

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरा एक पड़ोसी गुमराही की बातें किया करता था, उस के मरने के बा'द मैं ने उसे ख़्वाब में देखा कि **काना** है। मैं ने पूछा : येह क्या मुआ़-मला है ? जवाब दिया : मैं ने सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की मुबारक शान में "ऐ़ब" निकाले, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ को "ऐ़बदार" कर दिया ! येह कह कर उस ने अपनी **फूटी हुई आंख** पर हाथ रख लिया। (شَرْحُ الصُّدور ص ٢٨٠)

हर सह़ाबी जन्नती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शाने अ़-ज़मत निशान में नुक्ता चीनी करना बेह़द ख़त़रनाक है। इन मुक़्तदर ह़ज़रात के बारे में ज़बान तो ज़बान दिल में भी कोई बुरी बात नहीं लानी चाहिये। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर

मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 252 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ''**तमाम सह़ाबए किराम** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم अहले ख़ैर व सलाह़ (या'नी भलाई और तक़्वे वाले) हैं और आ़दिल, इन का जब ज़िक्र किया जाए तो ख़ैर (या'नी भलाई) ही के साथ होना **फ़र्ज़** है।'' मज़ीद आगे चल कर सफ़ह़ा 254 पर फ़रमाते हैं : ''तमाम सह़ाबए किराम आ'ला व अदना (और इन में अदना कोई नहीं) **सब जन्नती** हैं, वोह जहन्नम (में दाख़िल तो क्या होंगे उस) की भिनक (या'नी हलकी सी आवाज़ तक) न सुनेंगे और हमेशा अपनी मन मानती मुरादों में रहेंगे, मह़शर की वोह बड़ी घबराहट इन्हें ग़मगीन न करेगी, फ़िरिश्ते इन का इस्तिक़्बाल करेंगे कि येह है वोह दिन जिस का तुम से वा'दा था, येह सब मज़मून क़ुरआने अ़ज़ीम का इर्शाद है।'' आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं :

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्ह़ाबे ह़ुज़ूर
नज्म[1] हैं और नाउ[2] है इ़तरत[3] रसूलुल्लाह की

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾17﴿ पुर असरार कूंएं का क़ैदी

शैबान बिन ह़सन का बयान है : मेरे वालिद साह़िब और अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ैद एक जिहाद में तशरीफ़ ले गए, उन्हों ने एक **पुर**

1 : सितारे 2 : कश्ती 3 : औलाद । अहले बैत

असरार कूंआं देखा जिस में से आवाज़ें आ रही थीं ! अन्दर झांका तो क्या देखते हैं कि एक शख़्स तख़्त पर बैठा है और उस के नीचे पानी है, उन्हों ने दरयाफ़्त किया : **जिन्न हो या इन्सान ?** जवाब दिया : इन्सान। पूछा : कहां के रहने वाले हो ? बोला : **अन्ताकिया** का, मेरा क़िस्सा येह है कि **मेरे रब** عَزَّوَجَلَّ **ने मुझे वफ़ात दे दी और अब मुझ को इस कूंएं में क़र्ज़ अदा न करने की वजह से क़ैद कर दिया है,** ''अन्ताकिया'' के कुछ लोग मेरा ज़िक्रे ख़ैर तो करते हैं मगर मेरा दैन (या'नी क़र्ज़ा) नहीं चुकाते। चुनान्चे येह दोनों (या'नी मेरे वालिद साहिब और उन का रफ़ीक़) ''अन्ताकिया'' गए और (मा'लूमात कर के) उस **पुर असरार कूंएं के क़ैदी** का दैन (या'नी क़र्ज़) चुका कर वापस उसी मक़ाम पर आए तो वहां न अब वोह शख़्स था न ही कूंआं ! येह दोनों ह़ज़रात उसी **पुर असरार कूंएं** वाली जगह पर जब रात सोए तो ख़्वाब में वोही शख़्स आया और उस ने कहा : ''جَزَاكُمَا اللّٰهُ عَنِّیْ خَیْرًا'' (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम दोनों को मेरी त़रफ़ से बेहतरीन बदला दे) मेरा क़र्ज़ अदा होने के बा'द मेरे **परवर्द गार** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ को **जन्नत** के फुलां ह़िस्से में दाख़िल फ़रमा दिया है। (شَرْحُ الصُّدور ص۲٦۷)

मक़्रूज़ शहीद भी जन्नत में न जा सकेगा जब तक कि...

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, ''क़र्ज़'' बहुत बड़ा बोझ है, जो लोग अदाए क़र्ज़ में टालम टोल करते हैं उन को बयान कर्दा **ह़िकायत** से डर जाना चाहिये और क़र्ज़ ख़्वाह (या'नी जिस से क़र्ज़ लिया है उस) को अपने पास धक्के खिलाने के बजाए ख़ुद उस के पास जा कर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

शुक्रिया के साथ उस का क़र्ज़ अदा कर देना चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि झूटमूट ''आज कल'' करते हुए मौत आ जाए और **क़ब्र** में जान फंस जाए। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم है **:** ''उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर कोई आदमी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में क़त्ल किया जाए फिर ज़िन्दा हो फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में क़त्ल किया जाए फिर ज़िन्दा हो और उस के ज़िम्मे **क़र्ज़ हो तो वोह जन्नत में दाख़िल न होगा** यहां तक कि उस का क़र्ज़ अदा कर दिया जाए।'' (مُسندِ اِمام احمد ج۸ص۳۴۸ حدیث۲۲۵۰۶) कोई मुसल्मान मक़्रूज़ फ़ौत हो जाए तो अ़ज़ीज़ों को चाहिये कि फ़ौरन उस का क़र्ज़ा अदा कर दें ताकि मर्हूम के लिये क़ब्र में आसानी हो। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم है **:** ''बेशक तुम्हारा रफ़ीक़ जन्नत के दरवाज़े पर अपने **क़र्ज़** की वजह से रोक दिया गया है अगर तुम चाहो तो उस का **क़र्ज़** पूरा अदा करो और अगर चाहो तो उसे (या'नी फ़ौत शुदा मक़्रूज़ को) अ़ज़ाब के ह़वाले कर दो।''

(اَلْمُستَدرَك لِلْحاکِم ج۲،ص۳۲۲ حدیث۲۲۶۰/۶۱)

नमाज़े जनाज़ा से क़ब्ल ए'लान का त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क्या ही अच्छा हो कि **नमाज़े जनाज़ा** पढ़ाने से क़ब्ल इमाम साहिब या कोई इस्लामी भाई इस त़रह़ **ए'लान** फ़रमा दिया करें **: मर्हूम** के अहले ख़ानदान और दोस्त अह़बाब तवज्जोह फ़रमाएं, **मर्हूम** ने अगर ज़िन्दगी में कभी आप की दिल आज़ारी या ह़क़ त-लफ़ी की हो तो इन को मुआ़फ़ कर दीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मर्हूम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

का भी भला होगा और आप को भी सवाब मिलेगा। आप का अगर मर्हूम पर **क़र्ज़** हो और वोह मुआफ़ कर देंगे तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ आप का भी बेड़ा पार होगा। इस के बा'द इमाम साहिब **निय्यत व नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा** भी बताएं।

वक़्त पर क़र्ज़ा अदा कर दो फिरो मत क़ौल से
झूट मत बोलो बचो बेकार टालम टोल से

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾18﴿ क़ब्र में आंखें खोल दीं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली عليه رَحْمةُ اللّٰهِ الوَلى फ़रमाते हैं : मैं ने एक **फ़क़ीर** (या'नी **अल्लाह** के एक नेक बन्दे) को **क़ब्र** में उतारा, जब कफ़न खोला और उन का सर ख़ाक पर रख दिया कि **अल्लाह** तआ़ला इन की ग़ुरबत (या'नी बे कसी) पर रह़म करे, **फ़क़ीर** ने आंखें खोल दीं और मुझ से फ़रमाया : **ऐ अबू अ़ली !** तुम मुझे उस (रब्बे करीम) के सामने ज़लील करते हो जो मुझ पर ख़ास करम फ़रमाता है ! मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे सरदार ! क्या मौत के बा'द ज़िन्दगी है ? फ़रमाया : بَلْ اَنَا حَیٌّ وَّكُلُّ مُحِبِّ اللّٰهِ حَیٌّ لَاَنْصُرَنَّكَ بِجَاهِي غَدًا (मैं ज़िन्दा हूं और ख़ुदा का हर प्यारा ज़िन्दा है, बेशक वोह वजाहत व इ़ज़्ज़त जो मुझे रोज़े क़ियामत मिलेगी उस से मैं तेरी मदद करूंगा)। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 433)

औलिया बा'दे वफ़ात भी ज़िन्दा होते हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा औलियाए किराम व शु-हदाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा होते हैं और सब कुछ मुला-ह़ज़ा फ़रमा रहे होते हैं : आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

फ़रमाते हैं : अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه शर्हे़ मिश्कात में लिखते हैं : **औलियाउल्लाह** की दोनों ह़ालतों (या'नी ज़िन्दगी व मौत) में अस्लन (या'नी किसी क़िस्म का कोई) फ़र्क़ नहीं, इसी लिये कहा गया है कि वोह मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर में तशरीफ़ ले जाते हैं। (फ़तावा र-ज़विय्या "मुख़र्रजा", जि. 9, स. 433, (مِرقاةُ المَفاتِيح ج ٣ ص ٤٥٩ تحت الحديث ١٣٦٦)

कौन कहता है वली को, मर गए
क़ैद से छूटे वोह अपने घर गए

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾19﴿ जब भेंस का पाउं ज़मीन में धंसा......

क़ब्रिस्तान की सूखी घास काट कर ले जाना जाइज़ है मगर जानवरों को क़ब्रों पर चलाने चराने की शरीअ़त में इजाज़त नहीं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : इस फ़क़ीर (या'नी आ'ला ह़ज़रत) غَفَرَاللّٰهُ تَعَالٰى لَهٗ (**अल्लाह** तआ़ला इस की मग़्फ़िरत फ़रमाए) ने (अपने पीर भाई) ह़ज़रते सय्यिदी अबुल हुसैन नूरी مُدَّظِلُّهُ الْعَالِى से सुना कि हमारे बिलाद में "मारह्रा मुत़ह्हरा" (अल हिन्द) के क़रीब एक जंगल में **गन्जे शहीदां** है (या'नी जिस में बहुत सारे शहीद मदफ़ून हैं उस इज्तिमाई क़ब्र के ऊपर चलता हुवा) कोई शख़्स अपनी **भेंस** लिये जाता था, एक जगह ज़मीन नर्म थी, नागाह (या'नी यकायक) **भेंस का पाउं** (ज़मीन में) जा रहा, मा'लूम हुवा यहां **क़ब्र** है, **क़ब्र** से आवाज़ आई : "ऐ शख़्स ! तूने

मुझे तक्लीफ़ दी, तेरी भेंस का पाउं मेरे सीने पर पड़ा।''

(फ़तावा र-ज़विय्या ''मुख़र्रजा'', जि. 9, स. 453)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा शु-हदाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ह़यात होते और क़ब्रों में इन के बदन सलामत रहते हैं।

शहीदों को मिली ह़क़ से ह़याते जाविदानी है
ख़ुदा की रह़मतें, जन्नत में उन की मेहमानी है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾20﴿ क़ब्र पर बैठने वाले को तम्बीह

उ़मारह बिन ह़ज़्म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْه وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे एक **क़ब्र** पर बैठे देखा, फ़रमाया : ओ **क़ब्र** वाले ! **क़ब्र** से उतर आ, न तू **साह़िबे क़ब्र** को ईज़ा दे न वोह तुझे। (**फ़तावा र-ज़विय्या ''मुख़र्रजा''**, जि. 9, स. 434) इस **म-दनी ह़िकायत** से वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो जनाज़े के साथ क़ब्रिस्तान जाते हैं और तदफ़ीन के दौरान مَعَاذَ الله बिला तकल्लुफ़ क़ब्रों पर बैठ जाते हैं।

﴾21﴿ क़ब्र पर पाउं रखा तो आवाज़ आई

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन **मुख़ैमर** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं : किसी शख़्स ने एक **क़ब्र पर पाउं** रखा, क़ब्र से आवाज़ आई : اِلَيْكَ عَنِّیْ وَلَا تُؤْذِنِی अपनी त़रफ़ हट, (या'नी दूर हो ! ऐ शख़्स मेरे पास से !) और मुझे ईज़ा न दे। (ایضاً ص ٤٥٢، شَرْحُ الصُّدُور ص ٣٠١)

22 क़ब्र पर सोने वाले से साहिबे क़ब्र ने कहा.....

हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : मैं "मुल्के शाम" से **बसरा** को आता था, रात को ख़न्दक़ (या'नी खाई या गढ़े) में उतरा। वुज़ू किया और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी। फिर एक **क़ब्र** पर सर रख कर सो रहा, जब जागा तो नागाह (या'नी अचानक) सुना कि **साहिबे क़ब्र** शिकायत करता और फ़रमाता है कि لَقَدْ اٰذَيْتَنِىْ مُنْذُ اللَّيْلَةِ या'नी तूने रात भर मुझे ईज़ा पहुंचाई। (साहिबे क़ब्र ने मज़ीद फ़रमाया :) हम जानते हैं और तुम को पता नहीं, हम अ़मल पर क़ादिर नहीं, तुम ने दो रक्अ़त जो नमाज़ पढ़ी वोह दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है उस) से बेहतर है, फिर उस ने (मज़ीद) कहा कि अहले दुन्या को **अल्लाह** तआ़ला हमारी त़रफ़ से जज़ाए ख़ैर दे जब वोह हम को ईसाले सवाब करते हैं तो वोह सवाब **नूर के पहाड़** की मिस्ल हम पर दाख़िल होता है।

(**फ़तावा र-ज़विय्या "मुख़र्रजा"**, जि. 9, स. 452, شَرْحُ الصُّدُور ص۳۰۵)

23 उठ तूने मुझे ईज़ा दी !

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मीना ताबेई़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं क़ब्रिस्तान में गया, दो रक्आ़त पढ़ कर एक **क़ब्र** पर लैटा रहा। ख़ुदा की क़सम ! मैं ख़ूब जाग रहा था कि सुना, **साहिबे क़ब्र** कहता है : قُمْ فَقَدْ اٰذَيْتَنِىْ उठ कि तूने मुझे ईज़ा दी। (دَلَائِلُ النُّبُوَّةِ لِلْبَيْهَقِى ج۷ ص ٤٠)

क़ब्र पर पाउं रखना ह़राम है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हिकायत नम्बर 21-22-23 से

मा'लूम हुवा कि **क़ब्र** पर पाउं रखने या सोने से **क़ब्र** वाले को ईज़ा होती है और बिला इजाज़ते शर-ई किसी मुसल्मान को ईज़ा देना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। लिहाज़ा किसी मुसल्मान की **क़ब्र** पर पाउं न रखे, न किसी **क़ब्र** को रौंदे और न किसी **क़ब्र** पर बैठे और न ही टेक लगाए क्यूं कि इस से नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَ التَّسْلِيم ने मन्अ़ फ़रमाया है : **दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم : (1) मुझे आग की चिंगारी पर या तलवार पर चलना या मेरा पाउं जूते में सी दिया जाना ज़ियादा पसन्द है इस से कि मैं किसी मुसल्मान की **क़ब्र** पर चलूं। (سُنَنِ ابن ماجه ج ٢ ص ٢٥٠ حديث ١٥٦٨) (2) एक आदमी को आग की चिंगारी पर बैठा रहना यहां तक कि वोह उस के कपड़े को जला कर उस की खाल तक पहुंच जाए, उस के लिये बेहतर है इस से कि **क़ब्र** पर बैठे।

(صَحيح مُسلِم ص ٤٨٣ حديث ٩٧١)

क़ब्रों को मिटा कर बनाए हुए रास्ते पर चलना ह़राम है

क़ब्रिस्तान में आ़म रास्ते से जाए, जो रास्ता नया बना हुवा हो उस पर न चले। "**रद्दुल मुह़्तार**" में है : (क़ब्रिस्तान में क़ब्रें मिटा कर) जो नया रास्ता निकाला गया हो उस पर चलना ह़राम है। (رَدُّالْمُحتار ج ١ ص ٦١٢) बल्कि नए रास्ते का सिर्फ़ **गुमान** हो तब भी उस पर चलना **ना जाइज़ व गुनाह** है। (دُرِّمُختار ج ٣ ص ١٨٣)

मज़ारात के गिर्द क़ब्रें मिटा कर बनाए हुए फ़र्श पर चलना फिरना ह़राम

कई मज़ाराते औलिया पर देखा गया है कि ज़ाइरीन की सहूलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

की ख़ात़िर मुसल्मानों की क़ब्रें मिस्मार कर के (या'नी तोड़ फोड़ कर) फ़र्श बना दिया जाता है, ऐसे फ़र्श पर लैटना, चलना, खड़ा होना, ज़िक्रो अज़्कार और तिलावत के लिये बैठना वग़ैरा **ह़राम** है, दूर ही से फ़ातिह़ा पढ़ लीजिये।

क़ब्र के क़रीब गन्दगी करना

क़ब्र पर रहने का मकान बनाना, या **क़ब्र** पर बैठना, या सोना, या उस पर बौल व बराज़ (या'नी पेशाब पाख़ाना) करना येह सब उमूर अशद्द (या'नी सख़्त तरीन) मक्रूह क़रीब ब ह़राम हैं। (फ़तावा र-ज़विय्या "मुख़र्रजा", जि. 9, स. 436) **सय्यिदे आ़लम** صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم फ़रमाते हैं : मुर्दे को **क़ब्र** में भी उस बात से ईज़ा होती है जिस से घर में उसे अज़िय्यत होती। (اَلفِردَوس بمأثور الخطّاب ج۱ص۱۲۰حدیث۷٤۹دارالفکربیروت)

मय्यित दफ़्नाने के लिये क़ब्रों पर पाउं रखना पड़े तो ?

क़ब्रिस्तान में मय्यित के लिये **क़ब्र** खोदने या दफ़्न करने जाना चाहते हैं, बीच में क़ब्रें ह़ाइल हैं, इस ह़ाजत के लिये इजाज़त है, फिर भी जहां तक बन पड़े बचते हुए जाएं और नंगे पाउं हों, उन अम्वात (या'नी क़ब्र वालों) के लिये दुआ़ इस्तिग़फ़ार (या'नी मग़्फ़िरत की दुआ़एं) करते जाएं। (फ़तावा र-ज़विय्या "मुख़र्रजा", जि. 9, स. 447) ऐसे मौक़अ़ पर सिर्फ़ वोही जाएं जिन को तदफ़ीन करनी है, एक भी ज़ाइद न जाए, म-सलन मा'लूम हो कि तीन काफ़ी हो जाएंगे तो चौथा वहां तक न जाए, और वोह तीन भी अगर मजबूरन क़ब्रों पर खड़े थे तो मिट्टी डालने के बा'द अज़ान व फ़ातिह़ा वग़ैरा के लिये न रुकें, फ़ौरन लौट

आएं और जहां यक़ीनी त़ौर पर पाउं तले क़ब्रें न हों ऐसी जगह आ कर अज़ान व फ़ातिह़ा की तरकीब करें।

क़ब्रिस्तान में च्यूंटियों को मिठाई डालना

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ किताब ''मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत'' के सफ़ह़ा 348 ता 349 से एक मा'लूमाती ''अ़र्ज़ व इर्शाद'' मुला-ह़ज़ा हो : **अ़र्ज़ :** मुर्दा (या'नी मय्यित) के साथ मिठाई (चीनी) क़ब्रिस्तान में **च्यूंटियों** के डालने के लिये ले जाना कैसा है ? **इर्शाद :** साथ ले जाना रोटी का जिस त़रह़ उ़-लमाए किराम ने मन्अ़ फ़रमाया है वैसे ही मिठाई है और **च्यूंटियों** को (आटा या मिठाई या चीनी वग़ैरा) इस निय्यत से डालना कि मय्यित को तक्लीफ़ न पहुंचाएं येह महज़ जहालत है। और येह निय्यत न भी हो तो भी बजाए इस (या'नी च्यूंटियों को डालने) के मसाकीने सालिह़ीन (या'नी नेक व पारसा ग़रीबों) पर तक़्सीम करना बेहतर है। ﴾फिर फ़रमाया﴿ : मकान पर जिस क़दर चाहें ख़ैरात करें, क़ब्रिस्तान में अक्सर देखा गया है कि अनाज तक़्सीम होते वक़्त बच्चे और औ़रतें वग़ैरा गुल (या'नी शोर) मचाते और मुसल्मानों की क़ब्रों पर दौड़ते फिरते हैं।

क़ब्र पर पानी छिड़कना

शबे बराअत में या किसी भी ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर बा'ज़ लोग अपने अ़ज़ीज़ की **क़ब्र** पर बिला मक़्सदे सह़ीह़ महज़ रस्मी त़ौर पर पानी छिड़कते हैं येह इस्राफ़ व ना जाइज़ है, और अगर येह समझते हैं कि इस से मय्यित की **क़ब्र** में ठन्डक होगी तो इस्राफ़ के साथ साथ निरी जहालत भी है, हां मय्यित की तदफ़ीन के बा'द छिड़कने में ह़रज नहीं बल्कि बेहतर है। इसी त़रह़ अगर **क़ब्र** पर पौदे वग़ैरा हैं इस लिये पानी डाला

जब भी ह़रज नहीं। लेकिन येह याद रहे ! पानी डालने के लिये अगर क़ब्रों पर पाउं रख कर जाना पड़ता हो तो जाएगा तो गुनहगार होगा, बल्कि ऐसी सूरत में उजरत दे कर किसी और से भी न डलवाए।

पुराने क़ब्रिस्तान में मकान बनाना कैसा ?

क़ब्रिस्तान वक़्फ़ है और वक़्फ़ में अपनी सुकूनत (या'नी रिहाइश) का मकान बनाना "तसर्रुफ़े बे जा" है और इस (या'नी वक़्फ़) में तसर्रुफ़े बे जा **ह़राम** है। फिर अगर उस क़ित़ए (या'नी ज़मीन के टुकड़े। प्लॉट) में क़ुबूर भी हों अगर्चे निशान मिट कर नापैद (या'नी बिलकुल ग़ाइब) हो गई हों, जब तो **मु-तअ़द्दद ह़रामों का मज्मूआ़** है, (म-सलन उन नज़र न आने वाली) क़ब्रों पर पाउं रखना होगा, चलना होगा, बैठना होगा, पेशाब पाख़ाना करना होगा, और **येह सब ह़राम** है। इस में मुसल्मानों को त़रह़ त़रह़ से **ईज़ा** है और मुसल्मान भी कौन ? अम्वात (या'नी फ़ौत शुदा) कि शिकायत नहीं कर सकते, दुन्या में इ़वज़ (या'नी बदला या इन्तिक़ाम) नहीं ले सकते, बे वज्हे शर-ई़ मुसल्मानों की ईज़ा **अल्लाह व रसूल** की ईज़ा है, **अल्लाह व रसूल** (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को ईज़ा देने वाला मुस्तह़िक़े **जहन्नम**। इसी त़रह़ अगर क़ब्रिस्तान के क़रीब मकान बनाया, पाख़ाने या धोबियों के ग़लीज़ पानी का बहाव क़ुबूर पर रखा तो येह भी **सख़्त ह़राम** है और जो बा वस्फ़े क़ुदरत उसे मन्अ़ न करे वोह भी **मुर-तकिबे ह़राम** है और ब त़-मए़ किराया (या'नी किराए के लालच में) उसे रवा (या'नी जाइज़) रखना सस्ते दामों दोज़ख़ मोल लेना (या'नी सस्ते भाव में जहन्नम ख़रीदना) है, येह काम उसी शख़्स के हो सकते हैं जिस

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

के दिल में न इस्लाम की क़द्र, न मुसल्मानों की इ़ज़्ज़त, न ख़ुदा का ख़ौफ़, न मौत की हैबत। وَالْعِیَاذُ بِاللّٰہِ تَعَالٰی (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह)

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 409)

पुरानी क़ब्र में हड्डियां नज़र आएं तो.....?

अगर बारिश या किसी भी सबब से क़ब्र खुल जाए और मुर्दे की हड्डियां वग़ैरा नज़र आने लगें तो उस **क़ब्र** को मिट्टी से बन्द कर देना ज़रूरी है। इस ज़िम्न में **फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़** से सुवाल जवाब मुला-ह़ज़ा हों **: सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़-लमाए दीन इस मस्अले में कि क़दीम क़ब्र अगर किसी वजह से खुल जाए या'नी उस की मिट्टी अलग हो जाए और **मुर्दे की हड्डियां** वग़ैरा ज़ाहिर होने लगें तो इस सूरत में क़ब्र को मिट्टी देना जाइज़ है या नहीं ? **अल जवाब :** इस सूरत में उसे मिट्टी देना फ़क़त़ जाइज़ ही नहीं बल्कि **वाजिब** है कि सित्रे मुस्लिम (या'नी मुसल्मान का पर्दा रखना) लाज़िम है।

(**फ़तावा र-ज़विय्या**, जि. 9, स. 403)

ख़्वाब की बुन्याद पर क़ब्र कुशाई का मस्अला

बा'ज़ अवक़ात मुर्दा ख़्वाब में आ कर बताता है कि मैं ज़िन्दा हूं ! मुझे निकालो ! या कहता है : मेरी क़ब्र में पानी भर गया है, मुझे यहां परेशानी है ! मेरी लाश किसी और जगह **मुन्तक़िल** (TRANSFER) कर दो ! वग़ैरा, चाहे बार बार इस त़रह़ के ख़्वाब नज़र आएं, ख़्वाबों की बुन्याद पर "**क़ब्र** कुशाई" या'नी क़ब्र खोलना जाइज़ नहीं। बिलफ़र्ज़ किसी ने ख़्वाब की बुन्याद पर या शर-ई इजाज़त न होने के बा वुजूद **क़ब्र** खोल दी और मय्यित का बदन मअ़ कफ़न सलामत निकला, ख़ुश्बूएं

आईं और दीगर भी अच्छी अच्छी निशानियां दिखीं तब भी बिला इजाज़ते शर-ई **क़ब्र कुशाई** करने वाले गुनहगार ही ठहरेंगे, इस ज़िम्न में **फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़** के ''सुवाल जवाब'' मुला-ह़ज़ा हों, **सुवाल :** इस बारे में क्या फ़रमाते हैं कि एक औ़रत पूरी मुद्दते ह़म्ल के बा'द ब ह़ालते ह़म्ल इन्तिक़ाल कर गई, दस्तूर के मुत़ाबिक़ उसे दफ़्न कर दिया गया, एक मर्दे सालेह़ (या'नी नेक आदमी) ने ख़्वाब देखा कि उस औ़रत को **ज़िन्दा बच्चा** पैदा हुवा है, अब शख़्से मज़्कूर के ख़्वाब पर ए'तिमाद कर के क़ब्र खोद कर बच्चे को औ़रत के साथ निकालना जाइज़ है या नहीं ? **अल जवाब :** जाइज़ नहीं, मगर जब कोई रोशन दलील हो, पर्दा मह़्फ़ूज़ है, और ख़्वाब त़रह़ त़रह़ के होते हैं, ''सिराजिया'' फिर ''हिन्दिय्या'' में है : एक औ़रत के ह़म्ल को सात महीने हुए बच्चा उस के पेट में ह़-र-कत करता था, वोह मर गई और उसे दफ़्न कर दिया गया, फिर किसी ने उसे **ख़्वाब** में देखा कि वोह कहती है मैं ने बच्चा जना है, तो क़ब्र न खोदी जाएगी। واللہ تعالٰی اعلم या'नी और ख़ुदाए बरतर ख़ूब जानने वाला है।

(**फ़तावा र-ज़विय्या** ''**मुख़र्रजा**'', जि. 9, स. 405, 406)

मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत मुख़र्रजा सफ़ह़ा 501 ता 503 से ''क़ब्र कुशाई'' के मु-तअ़ल्लिक़ निहायत अहम व इ़ब्रत अंगेज़ ''अ़र्ज़ व इर्शाद'' मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : **अ़र्ज़ :** एक **क़ब्र** कच्ची है, हर बार (बारिश वग़ैरा का) पानी भर जाता है (क्या) इस में पक्की डाट (या'नी सूराख़ बन्द करने की चीज़) लगा दें ? **इर्शाद : क़ब्र** पर डाट लगाने में ह़रज नहीं, हां खोली न जाए। मय्यित को दफ़्न कर के जब मिट्टी दे दी गई तो वोह ''अमानत'' हो जाता है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की, उस का कश्फ़ (या'नी खोलना) जाइज़ नहीं। (क्यूं कि **क़ब्र** में मुर्दा) दो ह़ाल से ख़ाली नहीं

(या तो) मुअ़ज़्ज़ब (या'नी अ़ज़ाब में) है या मुन्अ़म अ़लैह (या'नी ने'मत में)। अगर मुअ़ज़्ज़ब (या'नी अ़ज़ाब में) है तो देखने वाला देखेगा इसे, जिस से उसे (या'नी ख़ुद देखने वाले को) रन्ज पहुंचेगा और कर कुछ नहीं सकता। और अगर मुन्अ़म अ़लैह (या'नी ने'मत में) है तो इस में उस (या'नी मय्यित) की ना गवारी है।

क़ब्र पर बच्चे कूदते फिरते हैं

मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत के मुअल्लिफ़ (या'नी तरतीब देने वाले) शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عليه के **इर्शाद** के तह़्त ह़ाशिये में फ़रमाते हैं : ''फ़क़ीर कहता है कि अगर सूरत مَعَاذَاللّٰه सूरते ऊला (या'नी अ़ज़ाब वाला मुआ़-मला) है तो ना गवारी और ज़ियादा होनी चाहिये और बे वजह नाह़क़ ईज़ाए मुस्लिम ह़राम (और) ख़ुसूसन ईज़ाए मय्यित, नीज़ ह़दीस के इर्शाद से साबित है कि ''मुर्दे को क़ब्र से तक्या (या'नी टेक) लगाने से भी अज़िय्यत होती है।'' तो مَعَاذَاللّٰه महूज़ अपनी ख़्वाहिश के लिये न (कि) ज़रूरत व ह़ाजत के लिये उस पर कुदाल चलाना और **क़ब्र** को खोद डालना किस क़दर सख़्त ईज़ा का बाइ़स होगा। आह ! मुसल्मानों के क़ब्रिस्तानों की आज जो रद्दी ह़ालत है उस पर जिस क़दर भी रोया जाए कम है। **क़ब्र** पर लोग बैठ कर हुक़्क़े पीते, ख़ुराफ़ात करते, लग़्व (या'नी बेकार) बातें बनाते, गालियां बकते, क़ह्क़हे उड़ाते हैं। ग़ैर क़ौम ही के लोगों पर बस नहीं ख़ुद मुसल्मान भी येह ना शाइस्ता बेहूदा ह-र-कतें करते हैं। **बच्चे क़ुबूर पर खेलते कूदते फिरते हैं** बल्कि गधे उन पर लौटते लीद करते हैं, बकरियां बैठती

मेंगनियां करती हैं। وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه मुसल्मानो ! ख़ुदा के लिये आंखें खोलो ! एक दिन तुम्हें भी (दुन्या से) जाना है। उन मुर्दों की ख़ातिर कुछ इन्तिज़ाम नहीं करते (तो) अपने ही लिये करो।''

﴾24﴿ क़ब्र कुशाई करने वाला अन्धा हो गया !

बिला इजाज़ते शर-ई क़ब्र कुशाई का भयानक अन्जाम दुन्या में भी देखा जा सकता है, चुनान्चे **मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत** सफ़ह़ा 502 पर है : अ़ल्लामा त़ाश कुब्रा ज़ादा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह ह़दीस देखी कि ''उ़-लमाए दीन के बदन को मिट्टी नहीं खाती, बदन उन का सलामत रहता है।'' शैत़ान ने उन के दिल में वस्वसा डाला कि हमारे उस्ताद बहुत बड़े आ़लिम हैं उन की **क़ब्र** खोल कर देखूं कि उन का बदन किस हाल पर है ! इस वस्वसे ने उन पर ऐसा ग़-लबा किया कि शब में जा कर **क़ब्र** खोली, देखा कफ़न भी मैला न था। जब देख चुके, **क़ब्र** से आवाज़ आई : ''देख चुका ! **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) तुझे अन्धा करे।'' उसी वक़्त दोनों आंखें बह गईं (या'नी वोह नाबीना हो गए)।

﴾25﴿ क़ब्र खोलने वाला ज़िन्दा दफ़्न हो गया

इसी त़रह़ ना जाइज़ त़ौर पर क़ब्र कुशाई करने वाले एक और शख़्स का दर्दनाक अन्जाम मुला-ह़ज़ा हो चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक औ़रत का इन्तिक़ाल हुवा, दफ़्न कर दी गई, उस के शोहर को बहुत **मह़ब्बत** थी, **मह़ब्बत** ने मजबूर किया कि उस की **क़ब्र** खोल कर देखे, क्या ह़ाल है ! एक आ़लिम से येह इरादा ज़ाहिर किया, उन्हों ने मन्अ़ किया, न माना और उन को क़ब्रिस्तान तक साथ ले गया, आ़लिम ने हर चन्द मन्अ़ किया लेकिन उस ने **क़ब्र** खोली। आ़लिम साह़िब **क़ब्र** के कनारे बैठे रहे, वोह नीचे उतरा **देखा कि उस**

औ़रत के दोनों पाउं पीछे से ले जा कर उस की चोटी से बांध दिये गए हैं। उस ने चाहा कि खोल दूं हर चन्द त़ाक़त की मगर न खोल सका। "**अल्लाह** की लगाई हुई गिरह कौन खोल सके!" उन आ़लिम साह़िब ने मन्अ़ फ़रमाया, न माना। दोबारा फिर ज़ोर किया, आ़लिम साह़िब ने फिर मन्अ़ किया कि देख इसी में ख़ैरियत है इसे ऐसे ही रहने दे, उस ने कहा : एक बार तो और ज़ोर कर लूं फिर जो होगा देखा जाएगा। ज़ोर कर ही रहा था, **बिल आख़िर ज़मीन धंसी और वोह** (ज़िन्दा) **मर्द व** (मुर्दा) **औ़रत दोनों ज़मीन में चले गए।** وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى

(**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**, स. 502, 503)

न पैदा हो ज़िद और रहे हर घड़ी सर मेरा हुक्मे शर-ई पे ख़म या इलाही
तेरे क़ह्र से मैं अमां चाहता हूं तू दे आ़फ़िय्यत कर करम या इलाही
बसर ज़िन्दगी मेरी नेकी की दा'वत
में हो, निकले त़यबा में दम या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमा-नतन दफ़्न करने का मस्अला

बा'ज़ लोग दूसरे शहरों में फ़ौत हो जाते हैं तो उन को आ़रिज़ी त़ौर पर अमा-नतन दफ़्न कर दिया जाता है, फिर मौक़ए़ की मुना-सबत से निकाल कर उन के आबाई गाउं वग़ैरा में ले जा कर तदफ़ीन करते हैं येह **ना जाइज़** है। इसी त़रह़ के एक सुवाल के जवाब में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "येह ह़राम है, दफ़्न के बा'द (**क़ब्र**) खोलना जाइज़ नहीं।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 406)

किसी के प्लॉट पर बिग़ैर इजाज़त तदफ़ीन

अगर लोग किसी के प्लॉट या खेत वग़ैरा में बिग़ैर इजाज़ते

मालिक तदफ़ीन कर दें तो मालिक को इख़्तियार है कि मय्यित को निकलवा दे या ज़मीन को हमवार कर के उस पर खेती या ता'मीरात वग़ैरा जो चाहे करे। चुनान्चे फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : मिट्टी डालने के बा'द मय्यित को **क़ब्र** से न निकाला जाएगा मगर किसी आदमी के **हक़** के बाइस म-सलन येह कि ज़मीन ग़स्ब की हुई हो और मालिक को इख़्तियार होगा कि मुर्दे को बाहर निकाले या **क़ब्र** ज़मीन के बराबर कर दे। (درمختار ج۳ص۱۷۰) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن एक **सुवाल** के जवाब में इसी त़रह़ का जुज़्इय्या तह़रीर करने के बा'द प्लॉट के मालिक को **नेकी की दा'वत** देते हुए फ़रमाते हैं : येह अस्ल हुक्मे फ़िक़्ही है (या'नी शरअ़न इजाज़त तो है), मगर मुसल्मान **नर्म दिल** और दूसरे मुसल्मान (पर और) ख़ुसूसन मय्यित पर **रह़ूम दिल** होता है, قَالَ اللّٰهُ تعالٰی : (या'नी **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है) : رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ (پ۲۶الفتح:۲۹) (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और आपस में नर्म दिल) अगर वोह दर गुज़र करेगा (और ना जाइज़ त़ौर पर दफ़्न की जाने वाली मय्यित को अपनी ज़मीन में रहने देगा तो) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस** (प्लॉट के मालिक) **की ख़त़ाओं से दर गुज़र फ़रमाएगा।** اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ (پ۱۸النور۲۲) (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** क्या तुम इसे दोस्त नहीं रखते कि **अल्लाह** तुम्हारी बख़्शिश करे) अगर वोह अपने मुर्दा भाई पर एह़सान करेगा, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उस पर **एह़सान करेगा,** كَمَا تَدِيْنُ تُدَانُ (या'नी जैसा तुम करोगे वैसा ही तुम्हारे साथ किया जाएगा) अगर वोह अपने मुर्दा भाई का पर्दा फ़ाश न करेगा, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) **उस की पर्दा पोशी करेगा।** مَنْ سَتَرَ سَتَرَهُ اللّٰهُ (या'नी जो किसी की पर्दा पोशी करे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ उस की

पर्दा पोशी करेगा) अगर वोह अपने मुर्दा भाई की **क़ब्र** का एह़तिराम करेगा, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) **इस की ज़िन्दगी व मौत में इसे एह़तिराम बख़्शेगा।** اَللّٰهُ فِیْ عَوْنِ الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِیْ عَوْنِ اَخِیْهِ (**अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ)बन्दे की मदद फ़रमाता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद करता है) واللہ تعالیٰ اعلم

(**फ़तावा र-ज़विय्या "मुख़र्रजा"**, जि. 9, स. 379, 380)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मय्यित के साथ माल दफ़्न हो गया, क्या करे ?

अगर किसी की रक़म वग़ैरा मय्यित के साथ दफ़्न हो गई तो उस को निकालने के लिये क़ब्र कुशाई की इजाज़त है। चुनान्चे फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : औरत को किसी वारिस ने ज़ेवर समेत दफ़्न कर दिया और बा'ज़ वु-रसा मौजूद न थे उन वु-रसा को **क़ब्र** खोदने की इजाज़त है। किसी का कुछ माल **क़ब्र** में गिर गया, मिट्टी देने के बा'द याद आया तो **क़ब्र** खोद कर निकाल सकते हैं अगर्चे वोह एक ही दिरहम हो।(फ़तावा आ़लमगीरी, जि. 1, स. 167)

"ज़ियारते क़ुबूर सुन्नत है" के चौदह ह़ुरूफ़ की निस्बत से 14 म-दनी फूल

(1) क़ुबूरे मुस्लिमीन की ज़ियारत सुन्नत और मज़ाराते औलियाए किराम व शु-हदाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की ह़ाज़िरी सआ़दत बर सआ़दत और उन्हें ईसाले सवाब मन्दूब (या'नी पसन्दीदा) व सवाब।

(फ़तावा र-ज़विय्या "मुख़र्रजा", जि. 9, स. 532)

क़ब्रिस्तान में सलाम करने का त़रीक़ा

(2) इस त़रह़ खड़े हों कि क़िब्ले की त़रफ़ पीठ और क़ब्र वालों के चेहरों की त़रफ़ मुंह हो, इस के बा'द **तिरमिज़ी** शरीफ़ में बयान कर्दा येह सलाम कहिये :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَر

तरजमा : *ऐ* ***क़ब्र*** *वालो ! तुम पर सलाम हो,* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए, तुम हम से पहले आ गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं।*

(تِرمِذی ج۲ ص۳۲۹ حدیث ۱۰۵۵)

अरबों मर्हूमों से दुआ़ए मग़्फ़िरत ह़ासिल करने का विर्द

(3)जो क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो कर येह दुआ़ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْاَجْسَادِ الْبَالِيَةِ وَالْعِظَامِ النَّخِرَةِ الَّتِیْ خَرَجَتْ مِنَ الدُّنْيَا وَهِیَ بِکَ مُؤْمِنَةٌ اَدْخِلْ عَلَيْهَا رَوْحًا مِّنْ عِنْدِکَ وَسَلَامًا مِّنِّیْ

तरजमा : ''ऐ **अल्लाह** ! (ऐ) गल जाने वाले जिस्मों और बोसीदा हड्डियों के रब ! जो दुन्या से ईमान की ह़ालत में रुख़्सत हुए तू उन पर अपनी रह़मत फ़रमा और उन को मेरा सलाम पहुंचा ।'' तो (ह़ज़रते सय्यिदुना) आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) से ले कर इस (दुआ़ के पढ़ते) वक़्त तक जितने मुअमिन फ़ौत हुए सब उस (या'नी दुआ़ पढ़ने वाले) के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करेंगे । (شَرْحُ الصُّدُورص۲۲۶)

(4) अगर क़ब्र के पास बैठना चाहें तो साह़िबे क़ब्र के मर्तबे को मल्ह़ूज़ रख कर बा अदब बैठ जाइये । (رَدُّالْمُحتار ج۳ص۱۷۹)

ज़ियारते क़ुबूर के अफ़्ज़ल अवक़ात

(5) क़ब्रों की ज़ियारत के लिये येह चार दिन बेहतर हैं : पीर, जुमा'रात, जुमुआ़, हफ़्ता । (फ़तावा आ़लमगीरी, जि. 5, स. 350) (6) जुमुआ़ के दिन बा'दे नमाज़े सुब्ह़ ज़ियारते क़ुबूर अफ़्ज़ल है । (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 523) (7) रात को तन्हा क़ब्रिस्तान न जाना चाहिये । (ऐज़न) (8) **मु-तबर्रक** (या'नी ब-र-कत वाली) रातों में ज़ियारते क़ुबूर अफ़्ज़ल है ख़ुसूसन शबे बराअत । (फ़तावा आ़लमगीरी, जि. 5, स. 350) (9) इसी त़रह़ **मु-तबर्रक** (या'नी ब-र-कत वाले) दिनों में भी ज़ियारते क़ुबूर अफ़्ज़ल है

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

म–सलन ईदैन (या'नी ईदुल फ़ित्र और बक़्र ई़द), 10 मुहर्रमुल ह़राम और अ़–श–रए ज़िल हि़ज्जा (या'नी ज़ुल हि़ज्जा के इब्तिदाई 10 दिन) (ऐज़न)

क़ब्र पर अगरबत्ती जलाना

(10) **क़ब्र** के ऊपर "अगरबत्ती" न जलाई जाए इस में सूए अदब (या'नी बे अ–दबी) और बद फ़ाली है, हां अगर (ह़ाज़िरीन को) ख़ुश्बू (पहुंचाने) के लिये (लगाना चाहें तो) **क़ब्र** के पास ख़ाली जगह हो वहां लगाएं कि ख़ुश्बू पहुंचाना मह़बूब (या'नी पसन्दीदा) है

(मुलख़्ख़सन फ़तावा र–ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 482, 525)

क़ब्र पर मोमबत्ती रखना

(11) **क़ब्र** पर चराग़ या **जलती मोमबत्ती** वग़ैरा न रखे, हां अगर आप के पास, "चार्जर" टॉर्च या टॉर्च वाला मोबाईल फ़ोन न हो, गवर्नमेन्ट की बत्तियां भी न हों या बन्द हों और रात के अंधेरे में राह चलने या देख कर तिलावत करने के लिये रोशनी मक़्सूद हो, तो **क़ब्र** के एक जानिब ख़ाली ज़मीन पर **मोमबत्ती** या चराग़ रख सकते हैं, जब कि वोह ख़ाली जगह ऐसी न हो कि जहां पहले **क़ब्र** थी अब मिट चुकी है।

(12) आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ नक़्ल फ़रमाते हैं **:** सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रते **अ़म्र** बिन आ़स رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी, उन्हों ने दमे मर्ग (या'नी ब वक़्ते वफ़ात) अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया **:** "जब मैं मर जाऊं तो मेरे साथ न कोई नौह़ा करने वाली जाए न आग जाए।"

(صحیح مُسلِم ص۷۵ حدیث۱۹۲, फ़तावा र–ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 482)

जिस क़ब्र का पता न हो कि मुसल्मान की है या काफ़िर की

(13) जिस **क़ब्र** का येह भी ह़ाल मा'लूम न हो कि येह मुसल्मान की है या काफ़िर की, उस की ज़ियारत करनी, फ़ातिह़ा देनी हरगिज़ जाइज़ नहीं

कि **क़ब्रे** मुसल्मान की ज़ियारत सुन्नत है और फ़ातिह़ा मुस्तह़ब, और **क़ब्रे काफ़िर की ज़ियारत ह़राम** है और उसे ईसाले सवाब का क़स्द कुफ़्र । (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 533)

(14) अपने लिये कफ़न तय्यार रखे तो ह़रज नहीं और **क़ब्र** खुदवा रखना बे मा'ना है, क्या मा'लूम कहां मरेगा । (دُرِّمُختار ج۳ ص۱۸۳)

हों बारे गुनह से न ख़जिल दोशे अ़ज़ीज़ां
लिल्लाह मेरी ना'श कर ऐ जाने चमन फूल

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, ए'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।

ماخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
صحیح مسلم	دار ابن حزم بیروت	سنن ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	مستدرک	دار المعرفۃ بیروت
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	الفردوس بماٴثور الخطاب	دار الفکر بیروت
معجم الاوسط	دار الفکر بیروت	مصنف عبد الرزاق	دار الکتب العلمیۃ بیروت
موسوعہ ابن ابی الدنیا	المکتبۃ العصریۃ بیروت	کنز العمال	دار الکتب العلمیۃ بیروت
تاریخ بغداد	دار الکتب العلمیۃ بیروت	حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر بیروت	دلائل النبوۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
شرح الصدور	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند	فتاوی عالمگیری	دار الفکر بیروت
حدیقہ ندیہ	سردار آباد	درمختار	دار المعرفۃ بیروت
فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور	ردالمحتار	دار المعرفۃ بیروت

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गै़र सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुबली : A.J. मुधोल कोम्पलेक्स, A.J. मुधोल रोड, ओल्ड हुबली ब्रीज के पास, हुबली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, टी कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net